GOOD FRIDAY – A CELEBRATION OF DEATH

Death is one of those things that we clearly like to distance ourselves from, either in our discussions or in our experience. And celebrating someone's death is the last thing on anyone's mind. Yet Christians celebrate "Good Friday" in memory of the death of Jesus Christ. Celebrating death? Really? That's correct! And this was no ordinary death. It was a death designed for wicked criminals. It was long, it was painful and it was bloody. Jesus Christ, the Son of God, was first arrested, then humiliated, spat at, slapped, given flesh-ripping lashes, crowned with thorns, and then nailed to a cross to die of suffocation and excruciating pain. Why did the sinless One, who is God, die such a horrific death? Here are 10 main reasons:

1. **To Satisfy God's Anger against Human Sin**
   Romans 3:25 – *God put [Christ] forward as a propitiation by His blood, to be received by faith. This was to show God's righteousness, because in His divine forbearance He had passed over former sins.*

2. **To Pay the Huge Price for Our Sins**
   Mark 10:45 – *The Son of Man came not to be served but to serve, and to give His life as a ransom for many.*
   Hebrews 10:11-12 – *Every priest stands daily at his service, offering repeatedly the same sacrifices, which can never take away sins. But when Christ had offered for all time a single sacrifice for sins, He sat down at the right hand of God.*

3. **To Reconcile Us with God**
   Romans 5:10 – *For if while we were enemies we were reconciled to God by the death of His Son, much more, now that we are reconciled, shall we be saved by His life.*
   1 Peter 3:18 – *Christ also suffered once for sins, the Righteous for the unrighteous, that He might bring us to God , being put to death in the flesh but made alive in the spirit.*

4. **To Demonstrate God's Love for Sinners**
   Romans 5:7-8 – *One will scarcely die for a righteous person—though perhaps for a good person one would dare even to die—but God shows His love for us in that while we were still sinners, Christ died for us.*
   1 John 4:9-10 – *In this the love of God was made manifest among us, that God sent His only Son into the world, so that we might live through Him. In this is love, not that we have loved God but that He loved us and sent His Son to be the propitiation for our sins.*

5. **To Extend God's Forgiveness for Our Sins**
   Ephesians 1:7 – *In Him we have redemption through His blood, the forgiveness of our trespasses.*
   Colossians 2:13 – *And you, who were dead in your trespasses . . . God made alive together with Him, having forgiven us all our trespasses, by cancelling the record of debt that stood against us with its legal demands. This He set aside, nailing it to the cross.*

6. **To Declare Believing Sinners as Perfect before the Holy God**
   Romans 5:19 – *For as by the one man's disobedience the many were made sinners, so by the one Man's obedience the many will be made righteous.*
   2 Corinthians 5:21 – *For our sake He [God] made Him to be sin who knew no sin, so that in Him we might become the righteousness of God.*

7. **To Deliver Us from the Curse of Disobeying God's Law**
   Galatians 3:13 – *Christ redeemed us from the curse of the law by becoming a curse for us—for it is written, "Cursed is everyone who is hanged on a tree."*

8. **To Become the Only Sympathetic Mediator between God and Man**
   Hebrews 4:15-16 – *For we do not have a High Priest who is unable to sympathize with our weaknesses, but One who in every respect has been tempted as we are, yet without sin. Let us then with confidence draw near to the throne of grace, that we may receive mercy and find grace to help in time of need.*

9. **To Give Eternal Life to All Who Believe in Him**
   John 3:16 – *For God so loved the world, that He gave His only Son, that whoever believes in Him should not perish but have eternal life.*

10. **To Secure The Future of His Believers after Death**
    Romans 6:5 – *For if we have been united with Him in a death like His, we shall certainly be united with Him in a resurrection like His.*
    Hebrews 9:28 – *Christ, having been offered once to bear the sins of many, will appear a second time, not to deal with sin but to save those who are eagerly waiting for Him.*

शुभ शुक्रवार – मृत्यु का मनाया जाना

मृत्यु एक ऐसा विषय है जिससे हम हमेशा दूर रहना चाहते है, चाहे वो अपनी बातों में हो या अपने अनुभव में| किसी की मृत्यु में खुशी मनाना तो हम कभी सोच भी नहीं सकते| लेकिन फिर भी मसीही लोग यीशु मसीह के मृत्यु की याद में "शुभ शुक्रवार" मनाते है| मृत्यु का मनाया जाना? जी हाँ! और यह कोई साधारण मृत्यु नहीं थी| यह मृत्यु घिनोने अपराधीयों के लिए बनाई गई थी| यीशु मसीह, जो परमेश्वर का पुत्र है, पहले पकड़वाया गया, फिर अपमानित किया गया, उन पर लोगों ने थूका, उन्हे थप्पड़ मारे गए, कोड़े मारकर उनकी खाल उखाडी गई, कांटो का मुकुट उनके सिर पर पहनाया गया और उन्हे क्रूस पर चढ़ाया जिससे वो दम घुटने और अत्यंत दर्द से मार दिए गए| वो खुदा, जिसने कभी पाप नहीं किए, ऐसे भयानक मौत से क्यूँ गुज़रे? यह रहे १० मुख्य कारण:

1. **पाप के प्रति परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट करने**
   रोमियों ३:२५ *- उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।*

2. **हमारे पापों की बड़ी कीमत चुकाने**
   मरकुस १०:४५ *- क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।*
   इब्रानियों १०:११-१२ *- और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार बार चढ़ाता है। पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।*

3. **परमेश्वर के साथ हमारे टूटे संबंध को जोड़ने**
   रोमियों ५:१० *- क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?*
   १ पतरस ३:१८ *- इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।*

4. **पापियों के प्रति परमेश्वर का प्रेम साबित करने**
   रोमियों ५:७-८ *- किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।*
   १ यूहन्ना ४:९-१० *- जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।*

5. **हमारे पापों की क्षमा देने**
   इफिसियों १:७ *- हम को उस में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।*
   कुलुस्सियों २:१३ *- और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।*

6. **विश्वास करने वाले पापियों को पवित्र परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराने**
   रोमियों ५:१९ *- क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।*
   २ कुरिंथियों ५:२१ *- जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस[परमेश्वर] ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।*

7. **परमेश्वर के नियमों के खिलाफ जाने के श्राप से छुड़ाने**
   गलातियों ३:१३ *- मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है।*

8. **परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र दयालु मध्यस्थ बनने**
   इब्रानियों ४:१५-१६ *- क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।*

9. **उन पर विश्वास करने वालों को अनंत जीवन देने**
   यूहन्ना ३:१६ *- क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।*

10. **उन पर विश्वास करने वालों की मृत्यु के बाद उनके भविष्य को सुरक्षित करने**
    रोमियों ६:५ *- क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुड गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुड जाएंगे।*
    इब्रानियों ९:२८ *- वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।*